आर.एन.आई.नं. RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी. सं. RJ/UD/29-128/2015-2017

मन के जीते जीत सदा

अंक-164 | तारीख-21 मई, 2015, ज्येष्ठ शुक्ल - 4 | गुरुवार | उदयपुर | कुल पृष्ठ-2 | मूल्य-1 रुपया

कला जीवन जीने की

फेंफड़े

जुड़ा जिससे जीवन का तार ।
रक्त शुद्ध होता है जिसमें,
करे पवन संचार ।।
तीस लाख मिलियन
कोशिका जिसके भीतर होती ।
किलोमीटर लम्बी हो सकती,
जो चौबीस हजार ।।

मानवता

विकलांगों को सुविधाएं देगा बीसीसीआई : अनुराग ठाकुर

अब विकलांग भी अपने चहेते क्रिकेटरों को देखने के लिए स्टेडियम जा सकेंगे। बीसीसीआई इस योजना पर काम कर रहा है कि किस तरह से विकलांग लोग आराम से स्टेडियम तक मैच देखने पहुंचे। भास्कर से खास बातचीत में बीसीसीआईके सचिव अनुराग ठाकुर ने बताया कि फैंस क्रिकेट की रीढ़ है और हमारा फर्ज है कि फैंस को वो सब सुविधाएं मिलनी चाहिए ताकी वह आराम से मैच देख सके। इसमें विकलांग लोगों के लिए एक योजना बनाने जा रहे हैं।

अनुराग ठाकुर ने कहा कि कई विकल्पों पर विचार किया जा रहा है जिसमें स्टेडियम के एक हिस्से को सिर्फ विकलांगों के लिए मार्क किया जाना भी शामिल हैं। यही नहीं उन्हें बिना तकलीफ के टिकट मिले और वह आराम से स्टेडियम के उस मार्क किए हिस्से तक पहुंच जाए, इन सभी बातों का भी ध्यान रखा जाएगा। उन्होंने कहा कि अभी तक भारत में कहीं भी क्रिकेट स्टेडियम में इस तरह की कोई व्यवस्था नहीं है और न ही किसी ने इस बारे में सोचा है।

'होनहार बिरवान के होत चिकने पात'

''ओ बेटे – ''कल तो तूने पांच रूपये मांगे थे, और आज फिर पांच रूपये मांग रहा है।''

''हां पिता जी, वे सब खर्च हो गये। आज और दे दीजिये । अब चार दिन तक एक पैसा भी नहीं मागूंगा।''

पिता ने फिर से पांच रूपये तो दे दिए, पर अपने एक विश्वस्त नौकर को समझा भी दिया कि जब यह बच्चा जाने को निकले तब तूं इसके पीछे–पीछे चलना, और देखना आखिर यह क्या क्या खरीदता है?

घर से थोड़ी दूर पर बालक ने एक कच्चे मकान से एक दोस्त को बुलाया। दोनों पुस्तक बेचने वाले की दुकान पर गये, और उसे पांच रूपये की पुस्तकें दिलवा कर बोला – ''कल की, आज की इन दस रूपयों की पुस्तकों से तेरा पढ़ाई का काम बन जायेगा।'' यही बालक बड़ा होने पर देशबन्धु चितरंजन दास के नाम से विख्यात हुआ।

कला जीवन जीने की

यकृत (उदरपार्ट)

ये यकृत डेढ़ किलो का होता ।
पित्ताशय करे पित्त इकट्ठा,
हानि फिर भी न करता ।।
ग्रन्थि यही बड़ी है सबसे,
रक्त यहीं पहुँचाती ।
सभी ग्रन्थियों से इस अंग में,
रक्त पहुँचता रहता ।।

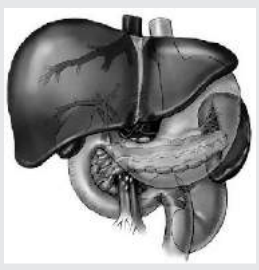

समानता

20 साल की छात्रा बनीं सांसद

ब्रिटेन के आम चुनाव में वहां की जनता ने 20 साल की स्टूडेंट माइरी ब्लैक पर भरोसा जताते हुए उन्हें सांसद चुना है। स्कॉटिश नेशनल पार्टी की माइरी ब्लैक ने लेबर पार्टी के सीनीयर नेता डगलस अलेक्जेंडर (47 साल) को पिजली एंड रेनफर्यूशायर साउथ की सीट पर हराया। माइरी ब्लैक से पहले 1667 में 13 साल के सांसद बने थे। 2006 में ब्रिटेन चुनाव में खड़े होने के लिए न्यूनतम उम्र सीमा 21 से घटाकर 18 कर दी गई थी। इसका फायदा ब्लैक को मिला। हाल–फिलहाल की बात करें तो 1983 में चार्ल्स कैनेडी ने 23 साल की उम्र में चुनाव जीता था।

जून में महिला क्रिकेट सीरीज भारत – न्यूजीलैंड

न्यूजीलैंड और भारत की महिला टीमों के बीच जून में पांच मैचों की वनडे और तीन मैचों की ट्वंटी–20 सीरीज खेली जाएगी जिसकी मेजबानी भारत करेगा।

भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने एक बयान जारी कर इस बात की जानकारी दी। बयान में बताया गया है न्यूजीलैंड 26 जून से 15 जुलाई तक भारत दौरे पर आएगी जहां वह मेजबान भारतीय टीम के साथ पांच वनडे और तीन ट्वंटी–20 मुकाबले खेलेगी।

दोनों टीमों के बीच वनडे मुकाबले बेंगलूरू के एम. चिन्नास्वामी स्टेडियम में खेले जाएंगे, जबकि कर्नाटक के अलुर स्टेडियम में ट्वंटी–20 मुकाबले होंगे। मुख्य सीरीज से पहले कीवी टीम भारत–ए के साथ अभ्यास मैच भी खेलेगी।

इसरो करेगा 5 विदेशी उपग्रहों का प्रक्षेपण

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) जून के अंतिम सप्ताह में एक साथ पांच विदेशी उपग्रहों का प्रक्षेपण करेगा।

इनमें तीन ब्रिटिश और दो अमरीकी उपग्रह होंगे। इस प्रक्षेपण में इसरो आठवीं बार पीएसएलवी के विस्तारित वर्जन (एक्सएल) का उपयोग करेगा।

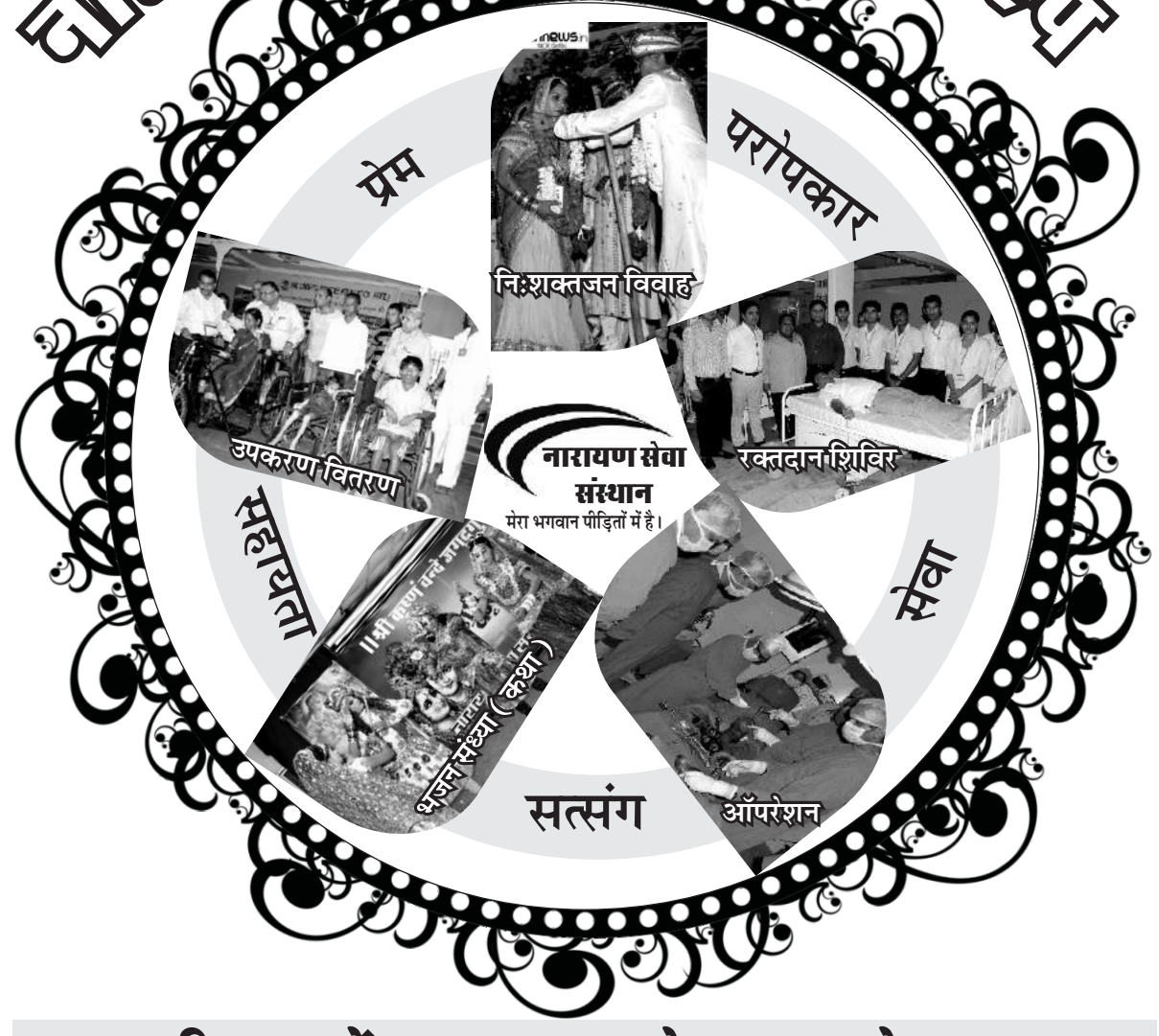

जीवन में बदलाव के 10 बड़े सूत्र

जब किसी के जीवन में बदलाव आता है, तो वह केवल उस एक व्यक्ति को प्रभावित नहीं करता। उसका परिवेश भी बदलता है। यहां कुछ ऐसे ही सूत्र दिए जा रहे है, जो आपके साथ–साथ दुनिया को खुशहाल बनाएंगे।

ये हैं आपके लिए

1. दिल+दिमाग = गति :– किसी भी काम को दिल और दिमाग दोनों से करें, पर अक्सर यह आसान नहीं होता। एक साथ इन दोनों को साधने के चक्कर में कई बार काफी समय निकल जाता है। इसलिए जितना जल्दी हो, रोजमर्रा के काम में इस दूरी को कम से कम करने का प्रयास करें। यही आगे बढ़ने का नियम है।

2. आपके पास क्या है–क्या जरूरत है – दुनिया में अपनी भूमिका को विस्तार दें। इसी दौरान यहां जाना चाहते हैं, वहां तक पहुंचने के लिए स्किल्स विकसित करें, मजबूत बनें, किसी नए कोर्स में दाखिला लें। ऐसे लोगों के बीच रहें, जो आपको पूर्ण बनाते हो।

3. अपने अतीत को खंगालें – यह समझने के लिए कि कौन–सी चीजें आपको प्रेरित करती है, कौन सी हीन अहसास कराती हैं, अपने अतीत में झांके। इससे उस करियर तक पहुंचने में मदद मिलेगी, जो आपकी प्रकृति के अनुरूप है।

ये दुनिया के लिए

4.क्या महत्वपूर्ण है – कौन सी सामाजिक समस्याएं है, जो आपके लिए महत्व रखती हैं। उन्हें प्राथमिकता के आधार पर बांटें। जो बातें मायने रखती हैं, उन्हें हां कहने का अर्थ है, अन्यों को आसानी से ना कहना।

5. दूसरों का नजरिया समझें – दुनिया के बारे में अपनी उत्सुकता विकसित करें। जानकारी बढ़ाएं। कुछ नया निर्माण करने के लिए विभिन्न चीजों के बीच आपसी संबंध और निर्भरता को समझे। इससे अपनी सीमाओं से बाहर आने में मदद मिलेगी।

6. दूसरों की मदद करें– अपनी स्थितियों को जाने और अपना कार्य करते रहें। पर अपने स्तर पर ही सही, दूसरों की समस्याओं को दूर करने की अपनी जिम्मेदारी समझे। उसे पूरा करने का प्रयास करें।

साहसिक बनें

7. खुद को मजबूत बनाएं – उस काम में एक्सपर्ट बने, जो आपको अक्सर करना होता है। उससे जुड़े सभी महत्वपूर्ण लोगों, संस्थाओं, शोध, किताबों व लेखों के बारे में जानें। ऐसे लोगों में रहें, जो आपकी ही तरह उत्सुक हों। स्वतंत्र सेवाएं दें। खुद को विकसित करें।

8. डर के आगे जीत – डर को पहचानना सीखें। यानी वास्तविक डर और ऐसे डर जिनके मूल में आपकी असुरक्षा की भावना छुपी है, उनके अंतर को पहचानें। अपनी असुरक्षा से जुड़े डरों को समझना यह संकेत है कि अब उनसे आगे बढ़ने का समय है। जो चीजें आपको डराती हैं, उनसे दूर नहीं भागे, उस और कदम बढ़ाएं।

9. बड़ा सोचें – खुद को कुछ अच्छा और कुछ नया करने की इजाजत दे। भले ही उसमें 100 प्रतिशत सफलता की उम्मीद न हो। आखिरकार असफलता जीवन में सीखने का अच्छा माध्यम है। यह उस बात का संकेत है कि आप बड़ा सोच रहे है। खुद को चुनौती देते रहें।

10. एक उद्यमी की तरह सोचें – अपने जीवन और करियर में एक उद्यमी की भावना से आगे बढ़ें। दूसरों में प्रभाव उत्पन्न करने के लिए अपनी ऊर्जा, एकाग्रता व सकारात्मकता का निवेश करें। नए विकल्पों को खोजें।

कला जीवन जीने की

आँखें

देखती रोशन करती आँखें ।
तीन सौ साठ से, एक सौ अस्सी,
बार झपकती आँखें।।
हर अनुभव का चौथा हिस्सा,
इन आँखों में रहता।
नयन बिना सब जग अंधियारा,
जीवन ज्योति आँखें।।

प्रियता

जान आदिकबि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू।।

सहस नाम सम सुनि सिव बानी। जपि जेईं पिय संग भवानी।।

आदिकवि श्रीवाल्मीकि जी रामनाम के प्रतापको जानते हैं, जो उलटा नाम ('मरा', 'मरा') जपकर पवित्र हो गये। श्रीशिवजी के इस वचन को सुनकर कि एक राम–नाम सहस्त्र नामे समान हैं, पार्वती जी सदा अपने पति (श्रीशिवजी) के साथ रामनाम का जप करती रहती हैं।।

कला जीवन जीने की

हृदय

बन्द मुट्ठी आकार तिकोना,
माँसपेशी का अवयव है।
सेन्टिमीटर दस लम्बा होता,
हृदय हमारा अद्भुत है।।
दो सौ पच्चीस ग्राम वजन का,
महिलाओं में होता है।
पुरुषों में कुछ अधिक वजन का,
हृदय देह में रहता है।।

सेवा

सम्पादकीय

पीड़ित, प्रताड़ित असहाय, रोगी और जरूरतमंद के लिए यदि सहायता का भाव आपके मन में है तो ईश्वरीय भक्ति भी उसमें सहायक हो जाती है। परमार्थ का कार्य में परमात्मा से जोड़ता है। उसकी कृपा सदैव मांगे और जब ऐसा पुण्य कार्य करेंगे तो उसकी प्रतिध्वनि भी साफ सुनाई पड़ेंगी।

दुनिया में अपना कुछ भी नहीं है। जो कुछ अपना दिखाई देता है, वह सम्बन्धों की वजह से है। जैसे ही हमारा रिश्ता किसी व्यक्ति या वस्तु से खत्म होता है।, वह पराया हो जाता है। लेकिन परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति न अपनी है–न पराई। ये सत्ताएं तो शाश्वत, अजर–अमर और लौकिक दायरों से ऊपर हैं। जब परमार्थ कार्यो के जरिये हम इनसे जुड़ते हैं, तो यह जुड़ाव लौकिक दुनिया के सम्बन्धों से एकदम अलग और अद्भूत होता है। जब हम उसे समर्पित करके कोई पुण्य कार्य करते हैं, तो वह ईश्वर की इच्छा से ही आगे बढ़ता और सफल होता है। धर्म के प्रति आस्थावान राजा रघु ने सर्वमेध यज्ञ किया जिसमें उन्होंने यज्ञ उके ब्रह्म कर्मो के एिल अपने पास जो कुछ भी था, दान कर दिया। सम्पत्ति के नाम पर मिट्टी का पात्र और कुश का आसन ही शेष था। ऋषि कॉत्स तक राजा की दानशीलता और यज्ञ का समाचार पहुँचा। वे भी यज्ञ स्थल पर पहुंचे। उन्होंने देखा कि राजा तो सब कुछ दान कर चुके हैं। ऋषि ने ऐसी दशा में कुछ कहना उचित न समझा और निराश लौट गए। जब रघु को उनके आगमन की जानकारी मिली तो उन्होंने ऋषि को वापस बुलवाया और कहा– 'आप यहां निवास करें जल्दी आपके अभीसिप्त धन का प्रबन्ध हो जाएगा।' कॉत्स ठहर गए और रघु लक्ष्मी की प्रार्थना करने लगे। लक्ष्मी ने राजा की परमार्थ कामना को समझा और राज–कोष को विपुल धन से भर दिया। राजा ने उसमें से कॉत्स को अभिसिप्त दान देकर सन्तुष्ट किया।

जो व्यक्ति परमार्थ प्रयोजन करते हैं, वे अपूर्ण नहीं रहते। दैवी शक्तियां उनके कार्य में सहायक बन जाती हैं। बंधुओं ! राजा रघु की भांति जब हमारे मन में भी किसी की सहायता का भाव हिलोर ले तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार उसकी मदद अवश्य करें । यदि सामर्थ्य नहीं है और भाव भी मन में हैं तो परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करें और उसकी कृपा मांगे कि वह आपके मनों भाव अथवा स्वभाव के अनुसार अपके सद्कर्म में सहयोगी बनें। निश्चय ही आपकी प्रार्थना फलीभूत होगी।

दूसरे की खूबी स्वीकार करो

एक सड़क पर दो आदमी चल रहे थे। वाकया लंदन का है। वे दोनों एक कैथेड्रल के सामने से गुजर रहे थे। कैथेड्रल से संगीत बज रहा था। दोनों में से एक आदमी ने कहा, 'संगीत को सुनो। क्या यह वाकई शानदार नहीं है? दूसरे व्यक्ति ने कहा, 'क्या संगीत? मुझे तो कुछ सुनाई नहीं पड़ रहा। यह तो कैथेड्रल से बाहर आ रहा शौर–शराबा है जिसे तुम संगीत कह रहे हो। वास्तव में इस शौर–शराबे ने संगीत को दबा दिया है।

कथा सार- जैसे कहते है।, एक आदमी का भोजन दूसरे के लिए जहर हो सकता है यानी लोग अलग अलग होते है, उनकी रूचियां अलग अलग होती हैं। इस दुनिया में हर किसी को छूट है किवह अपनी पसंद और प्राथमिकता चुन ले। मगर दूसरे की खूबियों भी स्वीकार करे।

कलम का जादूगर – रामवृक्ष बेनीपुरी

जन्म-परिचय : रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म सन् 1899 में ग्राम बेनीपुर, जिला मुजफ्फरपुर (बिहार) में हुआ। उनके माता–पिता की मृत्यु बचपन में ही हो जाने के कारण उनके जीवन के आरंभिक वर्ष अभावों –कठिनाइयों तथा संघर्षों में बीत गए। दसवीं तक की शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् से सन् 1920 में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय प्रतिभागी के रूप में जुड़ गए। वे अनेक बार जेल भी गए।

निधन : सन् 1968 में उनका देहांत हो गया।

प्रमुख रचनाएं : 15 साल की छोटी–सी उम्र में बेनीपुरी जी की रचनाएं पत्र–पत्रिकाओं में छपने लगीं। वे अत्यधिक प्रतिभाशाली पत्रकार (संवाद्दाता) थे। उन्होंने अनेक तरह की दैनिक, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र–पत्रिकाओं का सफल संपादन किया, जिनमें किसान मित्र, तरूण भारत, युवक, बालक, जनता , योगी, जनवाणी और नई धारा आदि उल्लेखनीय हैं।

गद्य की विविध विधाओं में उनके लेखन को बड़ी व्यापक प्रतिष्ठा मिली। उनका संपूर्ण साहित्य 'बेनीपुरी रचनावली' के आठ खण्डों में प्रकाशित है। बेनीपुरी जी की रचना–यात्रा के महत्वपूर्ण पडाव हैं – **चिंता के फूल** (कहानी), **जंजीरें और दीवारें** (संस्मरण), **माटी की मूरतें** (रेखाचित्र) **पतितों के देश में** (उपन्यास), **पैरों में पंख बाँधकर** (यात्रा–वृतांत) आदि।

साहित्यिक विशेषताएँ : बेनीपुरी जी की रचनाओं में स्वाधीनता की नई चेतना, मनुष्यता की चिंता तथा इतिहास की युगानुरूप व्याख्या है। विशिष्ट शैलीकार होने के कारण उन्हें 'कलम का

तेज रफ्तार में छूट न जाएं खूबसूरत पल

जनवरी की एक सर्द सुबह। अमेरिका के वॉशिंगटन डीसी का मैट्रो स्टेशन। एक आदमी वहां करीब घंटा भर तक वायलिन बजाता रहा। इस दौरान लगभग 2000 लोग वहां से गुजरे, अधिकतर लोग अपने काम से जा रहे थे। उस व्यक्ति ने वायलिन बजाना शुरू किया। उसके तीन मिनट बाद एक अधेड आदमी का ध्यान उसकी तरफ गया। उसकी चाल धीमी हुई और वह कुछ पल रूका और फिर जल्दी से निकल गया। 4 मिनट बाद, वायलिन वादक को पहला सिक्का मिला। एक महिला ने उसकी टोपी में सिक्का डाला और बिना रूके चलती बनी।

6 मिनट बाद, एक युवक कुछ देर उसे सुनता रहा, फिर घड़ी पर नजर डाली और आगे चला गया। 10 मिनट बाद, एक 3 वर्षीय बालक वहां रूक गया, पर जल्दी में दिख रही उसकी मां उसे खींचते हुए ले गयी। वह बच्चा मुड़–मुड़कर वायलिन बादक को देख रहा था। ऐसा ही कई बच्चों ने किया, पर अभिभावक घसीटते ले गये। 45 मिनट बाद, वह अभी भी बजा रहा था, अब तक केवल छः लोग ही रूके थे। उन्होंने भी कुछ देर ही उसे सुना। लगभग 20 लोगों ने सिक्का उछाला, पर रूके बगैर सामान्य चाल में चलते रहे। वादक को कुल 32 डॉलर मिले। 1 घंटे बाद, उसने वादन बंद किया। शांति छा गयी। इस बदलाव पर भी किसी ने ध्यान नहीं दिया। किसी ने वादक की तारीफ नहीं की। किसी भी व्यक्ति ने उसे नहीं पहचाना। वह था विश्व के महान वायलिन वादकों में से एक, जोशुआ बेल। जोशुआ 16 करोड़ रूपए के अपने वायलिन से इतिहास की सबसे कठिन धुन बजा रहे थे। महज दो दिन पहले ही उन्होंने बोस्टन शहर में मंचीय प्रस्तुति दी थी, जहां प्रवेश टिकटों का औसत मूल्य 100 डॉलर था। यह सच्ची घटना है। जोशुआ बेल एक प्रतिष्ठित समाचार पत्र द्वारा ग्रहणबोध और समझ को लेकर किये गए एक सामाजिक प्रयोग का हिस्सा बने थे। इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि किसी सार्वजनिक जगह पर किसी अटपटे समय में हम खास चीजों पर कितना ध्यान देते हैं? क्या आम अवसरों पर प्रतिभा की पहचान कर पाते हैं? सोचिए, जब दुनिया का एक श्रेष्ठ वादक बेहतरीन साज से इतिहास की कठिन धुनों में से एक बजा रहा था, तब अगर किसी के पास इतना समय नहीं था कि कुछ पल रूककर उसे सुने, तो सोचें कि हम कितनी सारी अन्य बातों से वंचित हो गये हैं, वंचित हो रहे हैं। इसका जिममेदार कौन हैं?

सोशल मीडिया से

अजन्मी बेटी का अपनी माँ के नाम पत्र

मेरी प्यारी माँ, मैं खुश हूँ और भगवान् से प्रार्थना करती हूं कि आप भी सुखी रहें। यह पत्र मैं इसलिये लिख रही हूं क्योंकि मैंने एक सनसनीखेज खबर सुनी है, जिसे सुनकर मैं सिर से पांव तक कांप उठी।

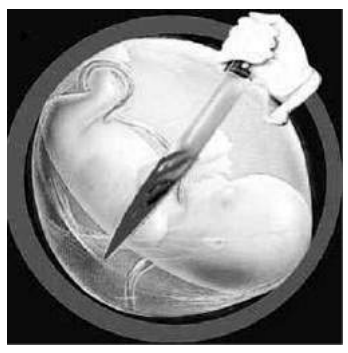

स्नेहदात्री माँ! आपको मेरे कन्या होने का पता चल गया है और मुझ मासूम को जन्म लेने से रोकने जा रही हैं – यह सुनकर मुझे तो यकीन नहीं हुआ भला मेरी प्यारी–प्यारी कोमल हृदया मां ऐसा कैसे कर सकती है? कोख में पल रही अपनी लाडली के सुकुमार शरीर पर नश्तरों की चुभन एक मां कैसे सह सकती है?

पुण्यशीला मां! बस, आप एक बार कह दीजिये कि यह जो कुछ मैंने सुना है वह सब झूठा है। दरअसल यह सब सुनकर मैं दहल–सी गयी हूं। मेरे तो हाथ भी इतने कोमल हैं कि इनसे डॉक्टर क्लीनिक की तरफ जाते वक्त आपकी चुन्नी भी जोर से नहीं खींच सकती ताकि आपको रोक लूं। मेरी बांहें भी इतनी पतली और कमजोर हैं कि इन्हें आप के गलें में डालकर लिपट भी नहीं सकती।

मधुमय मां! मुझे मारने के लिये आप जो दवा लेना चाहती हैं वह मेरे नन्हे से शरीर को बहुत कष्ट देगी। स्नेहमयी मां! मुझे बहुत दर्द होगा। आप तो देख भी नहीं पाएगी कि वह दवाई आपके पेट के अन्दर मुझे कितनी बेरहमी से मार डालेगी। डॉक्टर की हथौड़ी कितनी क्रूरता से मेरी कोमल खोपड़ी के टुकडे–टुकड़े कर डालेगी, उसकी कैंची मेरे नाजुक हाथ–पैरों को काट डालेगी। अगर आप यह दृश्य देखती तो ऐसा करने का कभी सोचती भी नहीं।

सुखदात्री माँ! मुझे बचाओ ..... कृपा करो, दयामयी मां। मुझे बचाओ.... वह दवा मुझे आपके शरीर से इस तरह फिसला देगी, जैसे गीले हाथों से साबुन की टिकिया फिसलती है। भगवान के लिये मां। ऐसा मत करना। मैं यह पत्र इसलिये लिख रही हूं क्यांकि अभी तो मेरी आवाज भी नहीं निकलती। कहूं भी तो किससे और कैसे? मुझे जन्म लेने की बड़ी ललक है मां! अभी तो आपके आंगन में मुझे नन्हे–नन्हे पैरों से छम–छम नाचना है, आपकी ममता भरी गोद में खेलना है। .... चिन्ता नहीं कर मां! मै। आपका खर्चा नहीं बढ़ाऊंगी । मां! बस एक बार... एक बार मुझे इस कोख से निकलकर चांद–तारों से भरे आपके आसमान तले जीने का मौका तो दीजिये। मुझे भगवान् की मंगलमय सृष्टि का आँगन तो देखने दीजिये।

महर्षि भृगु

चाक्षुष मन्वंतर में इनकी सप्तर्षियों में गणना होती है। इन्हें भी ब्रह्माजी के मानस पुत्र तथा प्रजापति का स्थान प्राप्त है। पत्नी का नाम 'ख्याति' जो दक्ष पुत्री हैं। इस दंपत्ति से तीन संतानें हुई। पुत्र थे 'धाता' और 'विधाता' और पुत्री थी 'श्री'। भगवान् नारायण के साथ 'श्री' का विवाह हुआ। इन तीन के अतिरिक्त और भी पुत्र हुए, जो विभिन्न मन्वंतरों में सप्तर्षि बने।

वाराहकल्प के दसवें द्वापर में महादेव ही भृगु बनकर जन्म लेते हैं। भृगु ऋषि स्वायम्भुव मन्वंतर में कहीं–कहीं सप्तर्षियों में से एक गिने जाते हैं। महर्षि च्यवन भी भृगु की ही संतान हैं। अनेक निःसंतान भृगु ऋषि के यज्ञों के कारण ही संतान पा सके। भृगु ऋषि दो महीने (श्रावण तथा भाद्रपद) में सूर्यदेव के रथ पर निवास किया करते है।

रोचक घटना

सरस्वती नदी के किनारे ... बहुत से ऋषि एकत्रित हुए। ब्रह्मा, विष्णु, महेश में कौन बडा? ऐसा छिड़ा विवाद। खूब वाद–विवाद हुआ, मगर ऋषिगण किसी परिणाम पर नहीं पहुंच पाए। महर्षि भृगु से, अपने तौर पर पता लगाने को सबने कह दिया।

निकल पड़े यात्रा पर भृगु जी! जा पहुंचे ब्रह्माजी के पास। मानसपुत्र होकर भी उनका अभिवादन नहीं, प्रणम नहीं, सत्कार नहीं। ब्रह्माजी जो भृगु की इस धृष्टता पर क्रोध जरूर आया, मगर उन्होंने इसे छिपा लिया। नासमझ है, ऐसा सोचकर क्षमा कर दिया। भृगु ऋषि अब जा पहुंचे रूद्रदेव के पास, कैलासपर्वत पर। माना जाता है कि महादेव (बड़े भाई) और भृगु (छोटे भाई) थे। जब बड़ा भाई उठा और अपने छोटे भाई को प्रेमपूर्वक आलिंगन करने की सोची, तो छोटे ने बड़े का अपमान करते हुए कह दिया – ''हटो पीछे! तुम तो उन्मार्गगामी हो। मैं तुम्हारे गले क्यों लगूं?'' महादेव को ऐसा क्रोध आ गया कि वे त्रिशूल उठाकर भृगु का वध करने के लिए प्रहार करने ही वाले थे कि पार्वती ने उन्हें रोक लिया उनकी प्रार्थना की, क्रोध शांत किया। बच गए भृग महर्षि।

अब भृगु जा पहुंचे तीसरे देव के पास। भगवान् विष्णु के करीब, वैकुंठ में। सीधे भगवान के श्यनागार में प्रवेश किया भगवान् नींद में थे, लक्ष्मीजी उन्हें पंखा कर रही थीं। जाते ही भृगु महर्षि ने भगवान् की छाती पर लात दे मारी। अकारण ही वह तुरंत उठे। भृगु को देखा। उनके चरण पकड़ कर बोले – ''कितने कोमल हैं ये। कहीं चोट तो नहीं लगी। वज्र–सी छाती पर प्रहार करने से पीड़ा तो हुई होगी। आपके आगमन की सूचना न होने पर आपके स्वागत के लिए नहीं आ पाया। प्रभु! क्षमा करें।'' फिर बोले – ''आपके चरणचिह्न मेरे वक्ष पर सदा बने रहेंगे, आपका आभारी हूं।''

जब सभी महर्षियों की तीनों देवों की यात्रा का पता चला, तो उन्होंने भगवान विष्णु को 'सर्वश्रेष्ठ देव' मान लिया तथा उनकी पूजा करते रहने की व्यवस्था दे दी।

मानव का जीवन व्रत

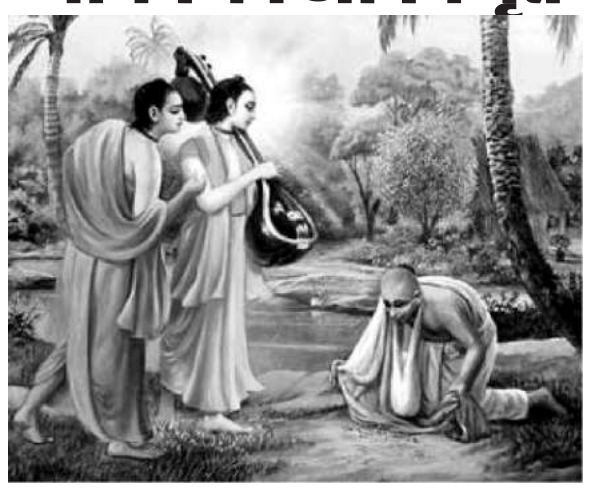

मानव ने हर मानव के हित, अपने मन अपनत्व जगाया।
नहीं पराया कोई जग में, और अपना विश्वास जगाया।।
श्री गणेश सेवा का करने, बड़े चिकित्सालय नित जाना।
घर से बना रोटियाँ, सब्जी, बडे प्यार से उन्हें खिलाना।।
कभी आम, नारंगी देना, कदली फल का भाग लगाना।
नर रूपी रोगी नारायण, की सेवा का गीत गुंजाना।।
शासकीय सेवा में रहकर, जितना भी कुछ दाम कमाना।
श्रद्धा सहित उसी धन में से, अंश जरा सा खर्चा करना।।
यही भावना आगे चलकर, शाश्वत सेवा गंगा बन गई।
साधू मानव कुलाचार्य की, नारायण की पूजा बन गई।।
दुनिया देख रही थी सारी, ईश्वर नजर गढ़ाए रहता।
सेवा पथ के शूल और काँटे, ईश्वर सदा हटाता रहता।।
बाधा पर बाधाएं आती, लेकिन मानव चलता रहता।
बाधाओं को रोंद–रोंद कर, अपना लक्ष्य सुनिश्चित करता।।
चौराहे और गलियां आई, अपने और पराएं मिलते।
मानव के सेवा सपने पर, ताने देते थे और हंसते।।
ऊंचे नीचे धूप–छाव में, कभी थकान भी आ जाती थी।
दुनिया के कई रंग देखकर, कभी निराशा भी आती थी।।
कभी अंधेरा भी होता था, कभी लक्ष्य ओंझल होता था।
तब जुनून का दीपक जलता, और लक्ष्य सन्मुख होता था।
सभी समय के साथ–साथ में, दुनिया उनको समझ रही थी।
सेवा पथ की शीतल वायु, सबके मन में लहर रही थी।।

–बंशी बावरा

मन के जीते जीत सदा

दैनिक समाचार पत्र

ई.डी.– 71, बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी
सेक्टर नं. – 6, उदयपुर (राज.)313001
मो. नं. – 02943990014, 09672711118,09928022275

सदस्यता - शुल्क

मासिक शुल्क – 60 रुपये
त्रैमासिक शुल्क – 170 रुपये
अर्द्धवार्षिक शुल्क – 330 रुपये
वार्षिक शुल्क – 650 रुपये

सदस्यता - फॉर्म

मन के जीते जीत सदा का मासिक/त्रैमासिक/अर्द्धवार्षिक/वार्षिक सदस्य बनना चाहता हूँ/चाहती हूँ जिसकी सदस्यता की राशि मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट से भेज रहा हूँ/रही हूँ।

सदस्य का पूरा नाम.....
डाक का पता..... पिनकोड नं.....
व्यवसाय .....फोन/फैक्स..... मो.....
मनीआर्डर/ड्राफ्ट संख्या .....
दिनांक.....

नोट - कृपया मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चैक मन के जीते जीत सदा के नाम से ही भेजें।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी – कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल, जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमला देवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक – सोहन गाडरी
संपादक – लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादक सहयोगी – घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमला देवी, मुद्रण स्थल–13,भोपा मगरी, बीएसएनएल एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3, उदयपुर (राज.) प्रकाशन स्थल–ई–डी–71 बापा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.) सम्पादक–लक्ष्मी लाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 मो.–09928022275,09785039524 www.mannkijeet.com Email:- mankijeet2015@gmail.com